ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र | दिसंबर-जनवरी २०१६

आर्य सेवक

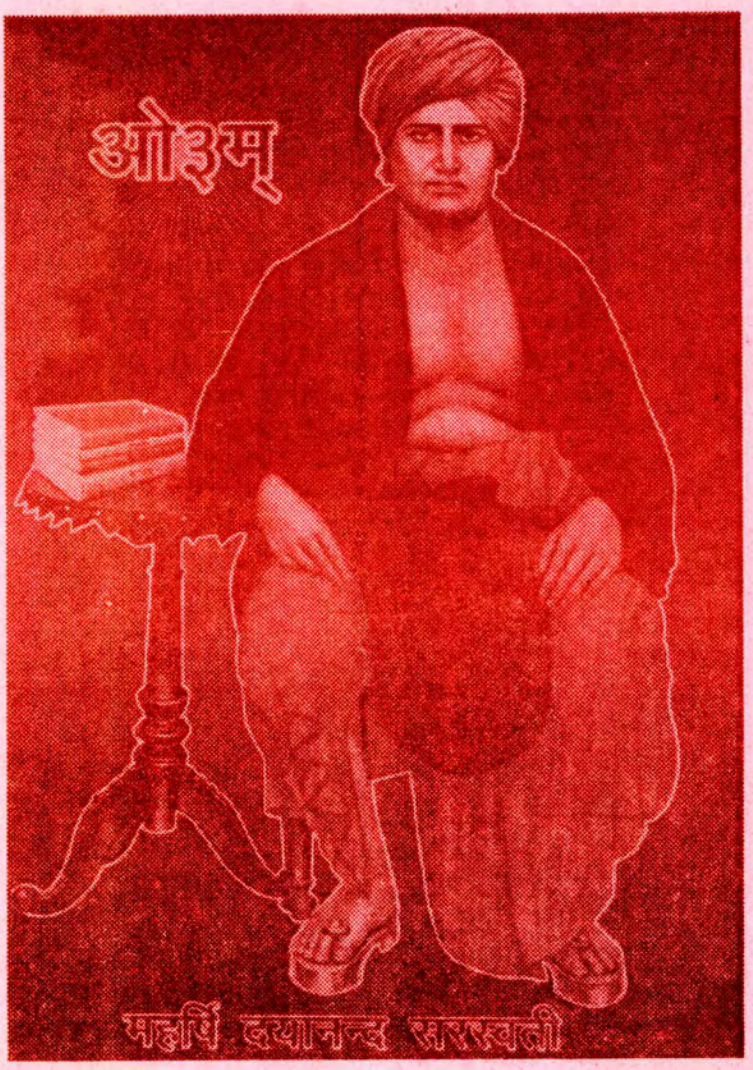

सभा कार्यालय - दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

हे गौ माता!

ऋषिः परमेष्ठी प्रजापतिः। देवता सविता। छन्दः क. स्वराड् बृहती,
र. ब्राह्मी उष्णिक्।

ओ३म्कइषेत्वोर्जेत्वावायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं
रप्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशँसो
ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।
-यजु० १।१

हे गौ माता! मैं (इषे१ त्वा) अन्नोत्पत्ति के लिए तुझे पालता हूँ, (अर्जे२ त्वा) बलप्राणदायक गोरस के लिए तुझे पालता हूँ। हे गौओ! तुम (वायवः स्थ) वायु के समान जीवनाधार हो। (देवः सविता) दाता३ परमेश्वर व राजा४ (श्रेष्ठतमाय कर्मणे) श्रेष्ठतम कर्म के लिए, हमें (वः प्रार्पयतु) तुम गौओं को प्रदान करे। (अघ्न्याः) हे न मारी जानेवाली गौओ! तुम (आप्यायध्वम्)५ वृद्धि प्राप्त करो, हृष्टपुष्ट होवो। (इन्द्राय) मुझ यज्ञपति इन्द्र के लिए (भागं) भाग प्रदान करती रहो। तुम (प्रजावतीः) प्रशस्त बछड़े-बछड़ियों वाली, (अनमीवाः६) नीरोग तथा (अयक्ष्माः) राजयक्ष्मा आदि भयङ्कर रोगों से रहित होवो। (स्तेनः) चोर (वः मा ईशत) तुम्हारा स्वामी न बने, (मा अघशंसः) न ही पापप्रशंसक मनुष्य तुम्हारा स्वामी बने। (अस्मिन् गोपतौ) इस मुझ गोपालक के पास (ध्रुवाः) स्थिर और (बह्वः७) बहुत-सी (स्यात) होवो। हे परमेश्वर व राजन्! आप (यजमानस्य) यजमान के (पशून्) पशुओं की (पाहि) रक्षा करो।

हे गौ माता! मैं तुझे पालता हूँ तेरी सेवा के लिए, अन्नोत्पत्ति के लिए और गोरस की प्राप्ति के लिए। तू सबका उपकार करती है, अतः तेरी सेवा करना मेरा परम धर्म है, इस कारण तुझे पालता हूँ। तुझे पालने का दूसरा प्रयोजन अन्नोत्पत्ति हैं तेरे गोबर और मूत्र से कृषि के लिए खाद बनेगा, तेरे बछड़े बैल बनकर हल जोतेंगे, बैलगाड़ियों में जुत कर अन्न खेतों से खलिहानों तक और व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं तक ले जायेंगे। इस प्रकार तू अन्न प्राप्त कराने में सहायक होगी, इस हेतु तुझे पालता हूँ। तीसरे तेरा दूध अमृतोपम है, पुष्टिदायक, स्वास्थ्यप्रद, रोगनाशक तथा सात्त्विक है, उसकी प्राप्ति के लिए तुझे पालता हूँ। हे गौओ! तुम वायु हो, वायु के समान जीवनाधार हो, प्राणप्रद हो, इसलिए तुम्हें पालता हूँ। दानी परमेश्वर की कृपा से तुम मुझे प्राप्त होती रहो। राष्ट्र के सविता देव का, राष्ट्रनायक राजा प्रधानमन्त्री और मुख्य मन्त्रियों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे श्रेष्ठतम कर्म के लिए तुम्हें गोपालकों के पास पहुँचाएँ। राष्ट्र की केंद्रीय गोशाला में अच्छी जाति की गौएँ पाली जाएँ, जो प्रचुर दूध देती हों और गोपालन के इच्छुक जनों को उचित मूल्य पर दी जाएँ। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ८ है। अग्निहोत्र रूप यज्ञ के लिए भी और परिवार के सदस्यों तथा अतिथियों को तुम्हारा नवनीत और दूध खिलाने-पिलाने रूप यज्ञ के लिए भी प्रजाजनों को राजपुरुषों द्वारा उत्तम जाति की गौएँ प्राप्त करायी जानी चाहिएँ। हे गौओ ! तुम अघ्न्या९ हो, न मारने योग्य हो। राष्ट्र में राजनियम बन जाना चाहिए कि गौएँ मारी-काटी न जाएँ, न उनका मांस खाया जाए। यदि किसी प्रदेश में बूचड़खाने हैं तो बन्द होने चाहिएँ। दुर्भाग्य है हमारा कि वेदों के ही देश में वेदाज्ञा का पालन नहीं हो रहा है। मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है, न उसके दाँत माँस चबाने योग्य हैं, न आँतें मांस पचाने योग्य हैं। हे गौओ ! तुम्हारी अच्छी पुष्ट होकर रहो। मुझ यज्ञपति इन्द्र का भाग मुझे देती रहो, बछड़े-बछड़ियों का भाग उन्हें प्रदान करती रहो। तुम प्रजावती होवो, उत्तम और स्वस्थ बछड़े-बछड़ियों की जननी बनो। तुम रागरहित और यक्ष्मारहित होवो। तुम मुझ सदाचारी याज्ञिक गोस्वामी के पास रहो, चोर तुम्हें न चुराने पावे। पापप्रशंसक ओर पापी मनुष्य तुम्हारा स्वामी न बने। पापी नर पिशाचों को गोरस नसीब न हो। मुझ गोपालक के पास तुम स्थिररूप से रहो, संख्या में बहुत होकर रहो, जिससे मैं गोशाला चलाकर उन्हें भी तुम्हारा दूध प्राप्त करा सकूँ, जो स्वयं गोपालन नहीं कर सकते हैं। हे परमेश्वर ! मुझ यजमान के पशुओं की रक्षा करो, हे राजन् मुझ यजमान के पशुओं की रक्षा करो।

पाद-टिप्पणियाँ

१. इष्=अन्न, निघं० २.७
२. ऊर्ग् रसः, श० ५.१.२.८। ऊर्ज बलप्राणनयोः, चुरादिः।
३. दीव्यति ददातीति देवः दाता। देवो दानाद्, निरु० ७.१५।
४. षु प्रसवैश्वर्ययोः, भ्वादिः, षूङ् प्राणिगर्भविमोचने, अदादिः।
(सविता सर्वजगदुत्पादकः सकलैश्वर्यवान् जगदीश्वरः-द०भा०।
(सवितः) सकलैश्वर्ययुक्त सम्राट्, य० ९.१-द०भा०।
५. (ओ) प्यायी वृद्धौ, भ्वादिः।
६. (अनमीवाः) अमीवो व्याधिर्न विद्यते यासु ताः। अम रोगे इत्यस्माद् बाहुलकाद् औणादिक ईवन् प्रत्ययः-द०भा०।
७. बह्वीः=बह्व्यः। बह्वी+जस्, पूर्वसवर्णदीर्घ, वा छन्दसि पा० ६.१.१०६।
८. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। -श०१.७.१.५
९. अघ्न्या=गौ, निघं० २.११। अघ्न्या अहन्तव्या भवति, निरु० ११.४०।
अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति, म०भा० शान्तिपर्व २६३।

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११६ अंक १२
सृष्टि संवत १९६०८५३११५
दयानन्दाब्द - १९०
संवत - २०७१
सन् २०१५ दिसम्बर

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो.नं. ०९४२२१५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
अशोक यादव
मो. ०९३७३१२११६

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
e-mail : jasysinghgaekwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड,
कृपाल चौक, मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ९३७३१२११६४
मनोज शर्मा
मो. ९५६१०७९८९४

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार,
सदर, नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क्र. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
१.	संपादकीय		१
२.	सभा का निर्वाचन		२
३.	शुभकामनायें		३
४.	सुर्य कि सुन्दर किरणों से सुख		४
५.	कुमारिल भट्ट का अखण्ड व्रत		५
६.	देवताओं के नाम पर	पं. उमेशसिंह विशारद	६
७.	जरा सोचो तो... कडवे प्रवचन से		७
८.	मुक्तिधाम	स्वामी प्रवासानंद	८
९.	वेदो कि ओर चलो	डॉ. बिर्जेद्रपाल सिंह	९
१०.	मुम्बई आदर्श जीवन निर्माण शिविर		११
११.	काव्य सुधा	पं. सत्यवीर शास्त्री	१२
१२.	स्वतंत्रता से पूर्व आर्य समाज	देशराज आर्य	१३
१३.	स्वामी श्रद्धानन्दजी का बलिदान	स्वामी ओमान्द सरस्वती	१५
१४.	राज्य स्तरीय युवा चेतना शिवीर		१९
१५.	आर्य जगत के समाचार व सुचनायें		२०

== 000 ==

टीप - प्रकाशित कृतियों में व्यक्ति विचार लेखकों के हैं इनसे आर्य सेवक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादकीय...

हमें हमेशा बुराई के खिलाफ लड़ना चाहिए, बुरे के खिलाफ नहीं, क्योकि उसे अपनानेवाले हमारे अपने ही होते है, हे दयानंद.... दया कर....

दिसम्बर २०१५ की गहरी अंधेरी रात मे मैं भटक रहा था, जंगल मे, जंगल भी सीमेन्ट, रेती, गिट्टी का दूरदूर तक सुनसान सड़क, मन विचलित था, सोच रहा था.... काश मुझे भी कहीं कोई विराजानंद मिल जाये.... उनसे उनके शिष्य महर्षि दयानंद से जानना चाहता था कि आज उनके अनुयायीयों को देखकर वे कितने खुश है, बस यही सोचता-सोचता बढ़े चलेा जा रहा था तो अचानक एक तेजस्वी वृद्ध पुरूष मेरे सामने प्रकट हो गये है, मैने उन्हें अभिवादन किया। वे खुश हो गये और बोले वत्स, तुम्हारे व्यवहार से मै प्रसन्न हुआ, बताओ तुम्हारी क्या समस्या है? मै तुम्हारी समस्या का समाधान करने मे सक्षम हूँ। मै बोला महाराज , मेरे ऋषि दयानंद ने मानव कल्याण कि अखण्ड-खण्ड पताका फैलाकर जीवन भर एक लंगोटी व एक लाठी से समाज का कल्याण किया जिसे देख राजे महाराजे, जमिदारो, सेठ-धन्नासेठों ने अपार सम्पत्ती भूमी आर्य समाज को दान कर दी। जिसमे उस वक्त स्वतंत्रता की लड़ाई लडी। वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार कर देश को आजाद किया गया, किन्तु आज आज़ादी के ६० वर्ष के बाद भी उनके अनुयायी आपस में लड़ाई कर उनकी गौरवशाली जीवन में कंलक लगा रहे है। कुछ ऐसा ब्रह्मास्त्र दो विवाद खत्म हो व पुनः आर्य प्रतिनिधी मध्यप्रदेश व विदर्भ की भू-संम्पत्तीयो की रक्षा करने मे हम समर्थ हो.... वेद से प्रचार प्रसार मे विद्वानों का आसरा ले। समाज मे गौरवशाली स्थान बना सके। मेरी इन बातों को सुनकर महात्माजी उदास हो गये। उन्होंने थोड़ा विचार किया व मेरे कंन्धो पर अपना पवित्र हस्त रख कहा कि लगे रहो आज नहीं तो कल इस समस्या का भी समाधन निकलेंगा, लेकिन ध्यान रहे, मेरे बताये मार्ग, संगठन सूत्र को अपने जीवन मे उतारने का प्रयास जारी रखना, मेरे आर्य समाज के नियमों - उपनियमों का पालन करवाने व करने से सदा उद्त रहना, सफलता अवश्य मिलेगी, इतना कहते ही वे अंर्तध्यान हो गये अचानक मेरा हाथ मेरी छाती पर पड़ा जहाँ रात्री ऋषि का लेख पढ़ते पढ़ते मै सो गया था, देखा सुबह हो गई है, लोगों के वर्ष २०१६ के नववर्ष की बधाईया मेरे मोबाईल पर लगातार आ रही थी और मैं सूर्य भगवान को पुनः अपनी दिशा से संसार को प्रकाश फैलाते हुये देख हाथ जोड़ खड़ा हो गया।

.........***.........

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का विर्वाचन संपन्न शास्त्री बने प्रधान, यादव बने मंत्री

मध्यप्रदेश के महाकौशल, विंध्यांचल, जबलपुर, सागर, होशंगाबाद, कटनी, रीवां, टिकमगढ़, महाराजपुर, खंण्डवा, बैतुल व महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में स्थित आर्य समाजों को संचालित करनेवाली प्रमुख संस्था आर्य प्रतिनिधी सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का त्रिवार्षिक निर्वाचन आर्य समाज हंसापुरी में संबंधित आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा हाल ही में संपन्न हुआ। वर्ष १८९९ में नरसिंहपुर तथा वर्ष १९६१ में नागपुर धर्मदाय आयुक्त महाराष्ट्र शासन द्वारा पंजीकृत महान समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती की इस संस्था का मुख्य कार्यालय नागपुर में सदर क्षेत्र में है, जहाँ से वैदिक धर्म के सोलह संस्कारों तथा वेद के प्रचार प्रसार में समस्त आर्य समाजो को पंजीकृत नियमों में बंधकर क्रियाशील रहते हुये मानव कल्याण में सहभागी होना है।

अंतरंग सभा द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी श्री. ताराचंद चौबे, आरटीआई कार्यकर्ता ने नियमानुसार उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचन कराया. जिसमें सभा के प्रधान पद पर पं. सत्यवीर शास्त्री (अमरावती), मंत्री पद पर अशोक यादव (नागपुर), उपप्रधान प्रा. अनिल शर्मा (नागपुर), जयसिंह गायकवाड (जबलपुर), श्रीमती शशी सोनी (सतना), उपमंत्री देवीप्रसाद आर्य (सिवनी), कृष्णलाल आर्य (खंडवा), हरीदत्त जुमळे (नागपुर), मयंक चतुर्वेदी (सिंगरौली), कार्यालय मंत्री संतोष गुप्ता (नागपुर), कोषाध्यक्ष यशपाल जानवानी (नांदुरा), पुस्तकाध्यक्ष रामसिंह ठाकुर (कारंजा लाड), आंतरिक लेखा निरीक्षक रमेशपंत घोडस्कर (अमरावती), आदि सर्वसम्मत्ति से निर्वाचित घोषित किए गए।

इसके अलावा अंतरंग सदस्यों के लिए ओमप्रकाश बोबडे (पथरोट), ताराचंद चौबे (वर्धा), लखनपाल सोनी (बैतूल), सुभाषराव सहारे (अमरावती), ब्रिजलाल राठी (यवतमाल), सुदर्शन देव आर्य (इटारसी), घनश्यामदास रेवतानी (खंण्डवा), रामभाऊ मुंगे (यवतमाल), घनश्यामदास आर्य (सतना), मदन कुमार जाम्भुर्णे (अमरावती), रामभाऊ बोचरे (अमरावती), स्वामी आत्माराम सरस्वती (शहडोल), बामनराव आवटे (बैतूल) का चयन भी प्रतिनिधियों की सभा में किया गया।

विशेष आमंत्रित सदस्यों में चेतराम लालवानी रंगलाल प्रजापति, सुमनताई पवार, विजय आर्य स्नेही, रायभान वाडीभस्मे, डॉ. गणेश बोरले, प्रभाकर झाडोकर, मधुकरराव गिते, साहेबराव महल्ले, नरेन्द्र सहगल, ओमप्यारी राठी, दुर्गा देवी पाराशर, वेदप्रकाश आर्य, अशोक किशनलाल, मनोज शर्मा आदि का समावेश है। सभा के त्रैवार्षिक साधारण सभा का बृहद अधिवेशन का समापन शांतिपाठ से संपन्न हुआ।

सभा प्रधान पं. सत्यवीर शास्त्री व नवनिर्वाचित मंत्री अशोक यादव ने समस्त आर्य समाजों से एकता बनाये रखने एवं सामाजिक, आध्यात्मिक व शैक्षणिक उन्नति में सहयोग की अपेक्षा की है।

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Web : www.thearyasamaj.org

✡ ओ३म् ✡

२३३६०९५०
२३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक :.....

दिल्ली सभा/2016-17/1000-62

दिनांक : .....

19 जनवरी 2016

प्रतिष्ठा में,

श्रीमान पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती (प्रधान)
श्रीमान अशोक यादव, नागपुर (मंत्री)
श्रीमान यशपाल आर्य,नांदुरा (कोषाध्यक्ष)
आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ,
नागपुर-440001

आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर
आवक क्रमांक...२१८.....
दिनांक...२३/१/२०१६...

हार्दिक शुभकामना

आपके **आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ, नागपुर,** में गत दिनों सम्पन्न हुए वार्षिक निर्वाचन में क्रमशः प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के पद का कार्य भार सौंपा गया। इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आपको हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में **आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ,** नागपुर की और उन्नति होगी तथा वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों के प्रचार एवं प्रसार की गति में भी वृद्धि होगी। आर्य समाज को आप एक नई दिशा प्रदान करेंगे। आर्य समाज का यश व कीर्ति बढ़ती रहे, धर्म, शिक्षा, संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता रहे। यही वेद की आज्ञा और आर्य समाज का उद्देश्य है जो आप सबके नेतृत्व में उन्नति को प्राप्त होगा। दिल्ली सभा में कभी अवश्य दर्शन देवें। चुनाव सूचना आर्य संदेश के अंक 11 दिनांक 18 जनवरी से 24 जनवरी 2016 में प्रकाशित कर दी गई है। समाज की गतिविधियों को अवश्य आर्य सन्देश में प्रकाशनार्थ ई-मेल aryasandeshdelhi@gmail.com एवं www.thearyasamaj.org भेजते रहें।

पुनः शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(विनय आर्य)
महामंत्री
मो. 09958174441

प्रतिष्ठा में,
प्रधान जी/ मंत्री जी,
आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ,
दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्ग,
मंगलीवारी बाजार, सदर, **नागपुर**
पिन - 440 001 (महाराष्ट्र)

.....***.....

सूर्य की स्वर्णिम किरणों से सुख और स्वास्थ्य प्राप्त करने का पर्व है, मकर संक्रांति। प्रकृति से जुड़े इस पर्व की परम्पराएं ऋतु अनुकूल और आरोग्यदायक हैं।

यह सुख और स्वास्थ्य का सूर्य है...

संक्रांति का शाब्दिक अर्थ है, बदलव का समय। संक्रांति उ काल या तिथि को कहते हैं, जब सूर्य एक राशि में भ्रमण पूर्ण कर दूसरी राशि में प्रवेश करता है। सूर्य के धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश को मकर संक्रांति कहते हैं। इसे पुण्यकाल माना जाता है और संक्रमण काल भी। मकर संक्रांति प्रत्येक वर्ष पौष माह में,तदनुरूप जनवरी माह के तेरहवें, चौदहवें या पंद्रहवें दिन मनाई जाती है।

इस दिन से सूर्य की उत्तरायण गति प्रारम्भ होती है, इसलिए इसे उत्तरायणी भी कहते हैं। मान्यता है कि उत्तरायण में मृत्यु होने से जन्म-मृत्यु के चक्र का अंत होता है और मोक्ष मिलता है। इस काल के महत्व का अनुमान भीष्म पितामह के उदाहरण से लगाया जा सकता है। कथा है कि वे बाणों की शय्या पर लेटकर प्राण त्यागने के लिए सूर्य के उत्तरायण होने का ही इंतजार कर रहे थे।

तिल-तिल कर बढ़ते हैं दिन

मकर संक्रांति से दिन रोज तिलभर बढ़ने लगते हैं, इसलिए इसे तिल संक्रांति भी कहा जाता है। यह मौसम के परिवर्तन का सूचक है। दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं। इस पर्व में शीत के प्रकोप से छुटकारा पाने के लिए शरीर पर तिल मलकर नदी में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। तिल और स्नान से जुड़ी परम्पराएं वास्तव में स्वास्थ्य से सम्बंधित हैं। इस मौसम में तिल का सेवन विशेष लाभदायक होता है। तिल उबटन, तिल हवन, तिल का व्यंजन और तिल का दान, सभी का अपा महतव है। इस पर्व पर स्नान, व्रत, अनुष्ठान, पूजन, हवन, यज्ञ, वेदपाठ, अभिषेक, दान आदि की प्रथाएं तो हैं ही, जरूरतमंदों को खिलाने का रिवाज़ भी है, जो ज्यादा पुण्यदायी है।

शास्त्र कहते हैं कि संक्रांति के दिन स्नान से निवृत्ति के पश्चात अक्षत का अष्टदल कमल बनाकर सूर्य की स्थापना कर पूजन करना चाहिए। यह व्रत निराहार के साथ साहार भी किया जा सकता है। धार्मिक विश्वास है कि संक्रांति व्रत से रोगों का क्षय होता है और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। जनविश्वास है कि यशोदा ने कृष्ण को प्राप्त करने के लिए इस दिन व्रत किया था।

पतंग पड़ती है, तो सेहत संवरती है

मकर संक्रांति को पतंग उड़ाने की विशेष परम्परा है। पतंग उड़ाने की परम्परा का उल्लेख तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में भी किया है। बालकांड में वर्णन है- राम एक दिन चंग उड़ाई, इंद्रलोक में पहुंची गई। यह लोक अभिरुचि का विषय तो है ही, इसका स्वास्थ्यगत कारण भी है। माना जाता है कि पतंग उड़ाने के दौरान आप ज्यादा से ज्यादा सूर्य किरणों के सम्पर्क में रहेंगे, जो आपको आरोग्य प्रदान करेगा।

सारे तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार

मकर संक्रांति के अवसर पर गंगा सागर में बड़ा मेला लगता है। स्नान-दान के लिए लाखों लोगों की भीड़ जुटती है। लोग कष्ट उठाकर यहां तक की यात्रा करते हैं। वर्ष में केवल एक दिन मकर संक्रांति को यहां लोगां की अपार भीड़ होती है, इसीलिए कहा जाता है- सारे तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार।

संक्रांति के विविध स्वरूप

* महाराष्ट्र - लोग एक-दूसरे को तिल-गुड़ देते हुए कहते हैं- तिल गुड़ घ्या आणि गोड़ गोड़ बोला। अर्थात - तिल-कुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो। इस दिन महिलाएं तिल, गुड़, रोली और हल्दी का आदान-प्रदान करती हैं।

* हरियाणा–पंजाब- लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है यह पर्व। अंधेरा होते ही आग जलाकर अग्नि पूजा करते हुए तिल, गुड़, चावल और भुने एए मक्के की आहुति दी जाती है। इस सामग्री को तिलचैली कहते हैं। इस अवसर पर लोग मूंगफली, तिल की गजक, रेवड़ियां आपस में बांटकर खुशियां मनाते हैं। बहुएं घर-घर जाकर लोकगीत गाते हुए लोहड़ी मांगती हैं। नई बहू और नवजात बच्चे के लिए लोहड़ी का विशेष महत्व होता है। इसके साथ पारम्परिक मक्के की रोटी और सरसों के साग का भी लुत्फ उठाया जाता है।

* तामिलनाडु- संक्रांति को पोंगल के रूप में मनाया जाता है। यह सामान्यतः तीन दिन का पर्व होता है। पहले दिन

कूड़ा-करकट इकट्ठा कर जलाया जाता है। दूसरे दिन लक्ष्मी जी की और तीसरे दिन पशुधन की पूजा की जाती है। पोंगल मनाने के लिए स्नान करके खुले आंगन में मिट्टी के बरतन में खीर पकाई जाती है, जिसे पोंगल कहते है। इसके बाद सूर्य देव को नैवेद्य चढ़ाकर खीर को प्रसाद के रूप में ग्रहण करते है। इस दिन बेटीऔर जमाई राजा का विशेष रूप से स्वागत किया जाता है।

* असम- संक्रांति बिहु और आंध्रप्रदेश में भोगी नाम से मनाई जाती हे।

* उत्तरप्रदेश- खिचड़ी संक्रांति के देशज तरीके से मनाया जाता है।

.....***.....

कुमारिल भट्ट का अखण्ड व्रत

नव स्नातक भट्टाचार्य वेदभाष्य में तल्लीन थे। उनकी विधवा माता आई और बोली- "वत्स ! मेरे विवाह की तैयारियाँ हो रही है आगामी सोमवार को संस्कार होना निश्चित हुआ है।"

"तथास्तु"" अनायास ही आचार्य के मुख से निकला।

विवाह के कुछ ही दिन बाद आचार्य की माता महाप्रयाण कर गई। आचार्य ने सहधर्मिणी को अपने अभिमुख आसन पर बिठाकर कहा- "देवी ! मैंने चारों वेदों का अविकल भाष्य समाप्त होने तक अखंड ब्रह्मचर्य का सुसंकल्प धारण किया हुआ है। ब्रह्मस्थ हुआ मैं बह्म के ब्रह्म (वेदज्ञान) का अनुवाद कर रहा हूँ। मुझे अपने शरीर की रक्षा का लेशमात्र भान नहीं रहता। अब तक माताश्री मेरी देख-रेख रखती थीं, अब तुम रखना।"

श्रद्धापूर्ण हृदय से देवी ने उत्तर दिया- "तथास्तु, देव !"

६८ वर्ष की आयु में पूर्णिमा की सायं भट्टाचार्य ने चारों वेदों का भाष्य समाप्त किया। उस रात पति-पत्नी को बड़ी निश्चिन्तता से निद्रा आई। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में आचार्य की निद्रा भंग हुई। छत पर चटाई पर लेटे-लेटे वाम पार्श्व में एक तपस्विनी चटाई पर लेटी हुई है।

आचार्य ने अपने और अपनी सहधर्मिणी के श्वेत केशों को देख मन ही मन कहा- दोनों ही शिर चंद्रिका के समान श्वेत हो गये।

आचार्य ने अपनी वाम भुजा फैलायी। परन्तु पूर्व इसके कि वह देवी के शरीर का स्पर्श कर सकते, देवी उठकर खड़ी हो गई, पति को प्रणाम करती हुई बोली- "देव ! आयु के अंतिम प्रहर में भी इन दोनों अछूते जीवनों को अछूते ही बने रहने दो। अब तक वेदभाष्य में लगे रहे, अब वेद प्रचार में लग जाइये।"

– जीवन सौरभ से संस्कार

देवताओं के नाम पर पशु हत्या तथा मांस भक्षण महापाप है, कलंक है।

पं. उम्मेदसिंह विशारद

मान्यवर, पाठकों निकट दशहरा, व दीपावली त्यौहार आ रहे हैं। दशहरे, बकरा ईद व काली मन्दिरों की पूजा में लाखों २ निरीह पशुओं की हत्या की जाती है और इसको धर्म का नाम यिा जाता है। विवेक शील मनुष्य भी चुपचाप इस पाप के कृत्य को देखता रहता है। निरपराध पशुओंकी हत्या से वातावरण अत्यन्त दूषित हो जाता है। और मनुष्यों के चित्त पर गहरा प्रीाव डाकर संस्कारों में हिंसक प्रवृत्ति वाला बना देते हैं। और सामान्य जीवन में थोड़ी-थोड़ी बातों में मनुष्यों की हत्यायें आए दिन देखने को मिलती है। ईश्वर की व्यवस्थानुसार पशु बलि हत्या व जीभ के स्वाद के लिए मांस खाना महापाप है।

दूषित विक्रतियां :- अज्ञान के कारण देवताओं के नाम पर पशुओं की हत्या तथा मांस खाने के लिए पशु हत्या दोनों ही गलत है? देवताओं के आगे पशु हत्या करके उन देवताओं की महिमा तो समाप्त होती ही है अपितु वह उल्टा श्राप देते होंगे। सभ्य समाज को हत्या करने का क्या अधिकार है। इन हत्याओं के कारण विश्व का वातावरण अत्यन्त दूषित हो गया है। आज की मानवता शर्मशार होकर तार-तार हो रही हैं।

मन्दिरों में बूचड़ खाने वाला दृश्य :- देवता किसी का अहित नहीं चाहते अपितु उपकार ही करने वाले होते हैं। किन्तु अज्ञान के कारण व ईश्वरीय आज्ञा वेदों की शिक्षाओं से रहित होने के कारण मन्दिरों में भैंसा, बकरा, मुर्गा काटकर बूचड़ खाने की दृश्य उपस्थित हो जाता है। और सामान्य लोगों के संस्कार हिंसक बनते चले जाते है।

अज्ञान व अन्धविश्वास की चरण सीमा :- हृदय कांप जाता है जब निरीह बेजुबान पशुओंकी देवताओं के नाम पर हत्या की जाती हें शास्त्रों में आठ पापी बताये जाते है, मारने वाला, बेचने वाला, खरीदने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला, सम्मति देने वाला, खाने वाला, मूक देखने वाला। किसी भी आर्ष शास्त्रों में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए जीव हत्या नहीं लिखीं है।

भारतीय धर्म वेद प्रधान धर्म है। :- भारत का धर्म, दया, प्रेम, मानवता और प्राणी मात्र के लिए स्नेह सिखाने वाला है, और वेदों की शिक्षाओं पर आधारित है। वेदों में कहीं पर भी देवताओं को खुश करने के लिए पशुओं की तथा मनुष्यों की हत्या करने का विधान नहीं है।

विश्व के धर्म गुरू मूक बनकर तमाशा देख रहे हैं :- अधिकांश विश्व के धर्म गुरू इन हत्याओं को गलत समझते हैं, और किन्तु इसका विरोध खुलरक नही करते क्या धर्म गुरूओं का कर्तव्य नहीं है इन अन्धविश्वासों को खत्म करने में एक जुट होकर आवाज उठायें।

देवी-देवताओं के नाम पर पशु हत्या से नरक मिलता है :- देव, यज्ञ, पितृ श्राद्ध तं अन्य कल्याणकारी कार्यों के लिए जो व्यक्ति हिंसा करता है वह नरक में जाता है। उसका यह जन्म व आने वाला जन्म दुःखमय हो जाता है। और पशु के शरीर पर जितने रोम होते है उतने वर्ष तक असिपत्र नामक नरक में रहता हैं और सारा परिवार भी दण्ड भुगतता हैं।

जीवन हत्या का कुपरिणाम :- स्वार्थी व धर्मविहीन लोगों ने साधारण लोगों को धर्म के नाम से भ्रमित करके अन्धविश्वास फैलाकर पशु हत्या करने का रिवाज बनाया हुआ है। इससे देवता प्रसन्न होना तो दूर की बात, अपितु कुपित होकर उल्टा श्राप देते हैं।

पशु हमारे जीवन का आधार है इन पर अत्याचार न करो :- बिना पशुओं के मानव जीवन अधूरा है ये हमारा बड़ा उपकार करते हैं, दूध, खेती, सवारी, ऊन व कारणों से हमारा उपकार करते हैं।

पशु बलि से पूजा अपवित्र होती है :- देवी-देवताओं जो पशु वध करके उन्हें खुश करने का कार्य करते है वह अति में भ्रम हैं। अपितु वह जिसको पूजा मानकर कार्य करते हैं वह अपवित्र हो जाती है। पूजा का अर्थ सत्कार है, और सत्कार सत्य का ही हो सकता है।

भारत को (आर्यव्रत) ही रहने दो राक्षस भूमि न बनाओं :- भारत वर्ष अनादि काल से ही वेदों की शिक्षा संस्कृति व संस्कार व वैदिक धर्म को फैलाने वाला विश्व गुरू रहा है। अवैदिक मान्यताओं से समाज में तमाम बुराईयों फैली हैं। यह नितान्त सत्य है। पशुओं की हत्याओं से समाज में कभी भी सुख-शान्ति नहीं आ सकती है। पशुओं की हत्या से मानव के संस्कारों में हिंसक प्रवृत्ति बनती है। जिसका

वर्तमान वातावरण प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज की बढ़ती जनसंख्या और भेड़चाल से मनुष्य विवेकहीन होता जा रहाहै। आज अन्धविश्वास चरम सीमा पर है। यदि संसार क तमाम धर्म गुरू इस समस्या को खत्म करने में एकजुट हो जायें तो मानवता का सुधार हो जायेगा। सम्पूर्ण भारत वर्ष भी यदि पशु हत्या रोकरने में सफल हो जाए तो पुनः भारत विश्व धर्म गुरू बन सकता है।

आर्य समाज संगठन पिछले पोने दो सौ सालों से इस अन्धविश्वास को रोकने को कार्य कर रहा है, और उत्तराखण्ड में सफल हो रहा है। उत्तराखण्ड के कई मन्दिरों में पशु बलि बन्द हो गई है।

वैदिक प्रचारक
गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून)
मोबाईल नं. ९४११५१२०१९

.....***.....

जरा सोचो तो.... कुछ करो तो... आगे बढो तो...

जीवन एक युद्धक्षेत्र है। तुम सब योद्धा हो। यहां हर किसी को जीवन से लड़ना होता है। जीवन में मुसीबतें भी आती हैं। उनसे लड़ना सीखो। मुसीबतों के सामने झुकने और घुटने टेकने से काम नहीं चलेगा। जीवन में आई चुनौतियां भी एक चुनाव है। चुनाव का सामना तो करना ही होगा। हालांकि यह पैराशूट लेकर विमान से कूदने जैसा साहस भरा काम है। तुम्हें इस निराशा के चक्र से बाहर निकलना होगा कि मैं कुछ नहीं कर सकता। अपने साहस को मजबूत बनाइये और आज ही चल पड़िए। सफलता तुम्हारा इंतजार कर रही है। यद्यपि ईश्वर तुम्हारे साथ हर पल है, किन्तु पहला कदम तो तुम्हें ही उठाना होगा।

– क्रांतिकारी राष्ट्र संत मुनिश्री तरूणसागरजी
के कडवे प्रवचन से

मुक्तिधाम

स्वामी प्रवासानन्द, भारत–नेपाल परिक्रमावासी

जो भी आया जगत में, जगत हंसा व रोय, ऐसी करनी कर चलो, आप हंसे, जग रोय।

प्रत्येक ऐसा नहीं होता कि उसकी करनी के बाद जग रोता हे। मर जाने पर अनगिनत में से चन्द ही ऐसे होत है जिनके ना रहने पर उसकी स्मृति में कवि कविता लिखते है कि रोना आ ही जाता है। सुनते-सुनते, रोना ना भी आवें तो वीर रस की कविता सुनकर कुछ न कुछ कर गुरजने को मन करता है। अइब हम मुख्य विषय पर आते है। करूण रस और वीर रस पर ये दोनों जगत गुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती पर समाज रूप से घटते है। जब कोई महापुरूष दुनिया से चला जाता है तो कवित कविता लिखता है, शिल्पकार स्मारक, चित्रकार-चित्र, मूर्तिकार स्मरणीय मूर्ति बनाता हे। भव-विभोर कर देने वाली ये सभी स्मृतियाँ जनता के मन-मस्तिष्क पर हमेशा-हमेशा के लिए रह हाती हे, जिसे देख-सुन समझ उनके अनुयायी अपने जीवन को भी तदानुसार बनाने को प्रयत्न कार्यरूप में कम ज्यादा अंशों में करते है। जिनका इतिहास उस महापुरूष के अनुयायियों के साथ बनता जाता है। ऐसे ही महापुरूषों की स्मृति में मुक्तिधाम-जामनगर का निर्माण हुआ जो संसार का सर्वोत्तम स्मारक था, परन्तु, किन्तु लेकिन समय के घूमने वाले चक्र के साथ वह अब नहीं रहा । दो-तीन पीढ़ी के देखते-देखते सब कुछ बदल गया। अब तो खण्डहर बता रहे है कि इमारत बुलन्द थी। देखकर सिवा दुःख के अन्य अनुभूति नहीं होती। काश ये अपने मूल रूप में, यथास्थिति में रह पाता? संसार कल्पनाशीलों से खाली नहीं हे। गुजरात की ही सिद्ध भूमि सिद्ध भूमि सिद्धपुर में ऐसा प्रयत्न आरम्भ हुआ जिसने देखते ही देखते मूर्त रूप लिया जो आज विश्व का सर्वोत्तम मुक्तिधाम हे। जिसे देख दर्शकों को नवप्रेरणा प्राप्त होती हे, सभी ने अपने-अपने महापुरूषों की स्मृति में यहाँ स्मृति चिन्ह बनवाये। अपने-अपने सामर्थ्य, आर्थिक स्थिति अनुसार। पूरे मुक्तिधाम में कहीं भी शंकर नहीं मूल शंकर (त्रिवेदी) से शुद्ध चैतन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती को कोई स्मृति चिन्ह इस मुक्तिधाम में नहीं है। जबकि विश्वव्यापी आर्य समाज, परोपकारिणी सभा, अजमेर। महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट-टंकारा, सत्यार्थ प्रकाश न्यास-उदयपुर, मोहन आश्रम-हरिद्वार, और भी अन्य स्थान है उन्हें ऐसा प्रयत्न करना ही चाहिए कि ऋषि से संबंधित इस सिद्धपुर में ऐसा स्मृति चिन्ह हो। सहस्त्र ओदिच्य महासभा भी यह कार्य करे तो सरस्वती नदी किनारे बसे सारस्वत ब्राह्मणों में से सिद्धपुर आये यहाँ भी सरस्वती नदी किनारे ही तो मुक्तिधाम है तो संसार का सर्वोत्तम कार्य करके ऐतिहासिक कार्य हो जाये। गुजरात तो गुजरात है । जहाँ से वर्तमान में भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी है जो क्रान्तिकारियों के निर्माता-महर्षि दयानन्द के परम शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा की राख, अस्थि स्वीजरलैण्ड से ला माण्डवी जन्म स्थान में विश्वदर्शनीय स्मारक बना सकते है तो राष्ट्र के पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मारक भी सिद्धपुर में क्यों नहीं बना सकते ।? टंकारा मुक्तिधाम को भी महर्षि दयानन्द मुक्तिधाम का भव्य रूप देकर ऐसा ही उदयपुर, हरिद्वार, अजमेर में भी हो सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो कहा था वह किया गया। जीते जी प्रेरणा ली तो क्या बाद में नहीं ली जा सकर्ती? ऐसे कई स्मारक संसार में है जिनसे जनता प्रेरणा ले रही, लेती रहे। मूर्तिपूजा विरोधी, प्रत्यक्ष में होने पर भी मन के भाव स्वयं ही समूह में पैदा हो तो अच्छा रहता है। स्मारक प्रेरणा स्थल है, घण्टे, घडियाल बजाने के स्थान नहीं। मन्नत मांगने के भी, पाखण्ड फैलाने के भी नहीं, ज्ञान विज्ञान के विरोधी भी नहीं है ये स्मारक। स्वामी नारायण के गाँधी नगर, गुजरात और दिल्ली के मन्दिर ऐसे ही है, हरिद्वार में, माउन्ट आबू में, भारत माता मन्दिर में घण्टे-घडियाल नहीं बजते, ना आरती उतारी जाती है। किन्हीं भी स्मारकों में कहीं भी। तो फिर महर्षि दयानन्द सरस्वाती के लिये स्मारक से इतना डर क्यों? कि यहाँ ये होगा। कहीं भी नहीं हो रहा। आर्य समाज वालों के स्मारकों पर भी। अब तो पौराणिकों ने भी महर्षि दयानन्द की स्मृति में कि- उत्तम स्वभाव हमारा दुशन का मन रिझावे, वह देखते ही कह दे, तुम प्यार के लिये हो। ऐसी चीजें स्थान-स्थान पर बना रखी हे। जिसे देख प्रेरणा लेती है इस देश की जनता । स्वामी दयानन्द ने स्वयं की मूर्तिपूजा का विरोध किया था, स्मारक का नहीं।

.....***.....

वेदों की ओर चलो का अभिप्राय

गुरू विरजानन्द की दक्षिणा से भारतीयों को एक नई रोशनी मिली। जैसे कि नेत्र हीन को पुनः यह संसार दिखाई देने लगे वैसा ही हमारा समाज अन्धविश्वास व अज्ञानता रूपी अन्धकार मय था वेदों को भूल चुके थे साधारण जैसों ने मन्त्रों का अर्थ बदल कर भ्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। अंग्रेजों ने वेदों को गड़रियों की गीत बताना आरम्भ कर दियाथि। लोगों ने पुराणों को ही वेद समझ लिया था और पुराणों में पाखण्ड व असत्य पूर्ण विषयों को अपने आचरण में लाना आरम्भ कर दिया था श्री कृष्ण जैसे महापुरूष का चरित्र ही विकृत करके रख दिया ऐसे विकृत विषयों व अन्ध विश्वासों आदि को समाज से निकल कर शुद्व व पवित्र समाज बनाने का आदेश दक्षिणा स्वरूप दिया था गुरू निरजानन्द ने दयानन्द से वेदों का उपदेश देने को कहा इससे विश्व का उद्धार होगा। दयानन्द ने वेद प्रचार हेतु सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। गुरू के आदेश का पालन जीवन भर निष्ठा पूर्वक किया।

गुरू विरजानन्द को पता था कि जो भारत गौरव शाली था यहां राम और भरत जेसे मर्यादा पालक थे राजा दिलीप, रघु- भोज भतृहरि अश्व पति हरिशचन्द्र जेसे सत्य वादी थे वह भारत आज पतित अवस्था में पहुँच चुका थाविश्व भर के राजा अधिकारी यहां आज्ञानुसार आया व जाया करते थे आज देश विदेशी अंग्रेज डच फ्रैन्च पुर्तगलियों व ग्लेट हौ का गुलाम हो गया था अतः वेद प्रचार द्वारा ही हम भारत वासी अपनी वास्तविकता को जान सकतें हैं इतिहास से पूर्वजों का गौरव जान सकते है इक्ष्वांकु मनु मान्धाता के शौर्य को जान सकते हैं वेद ही हमें राज्य व्यवर्स, अर्थशास्त्र, धनुर्विद्या चिकित्सा आयुर्वेद काय एवं शल्य नीतिशास्त्र संस्कार शिल्प विद्या भौतिक ज्ञान ईश्वर जीव वे प्रकृति सभी को ज्ञान कराता है इसीलिए कह है वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ग्रह तारे, नक्षत्र, सूर्य, भूगर्म, कृषि, मानव जीव परिवार जीवन मृत्यु, मोक्ष, धर्म आदि सभी का ज्ञान वेद में है। गुरू विरजानन्द जानते थे कि दयानन्द में प्रतिभा की कमी नहीं है वह सूर्य के प्रकाश की भांति वेद ज्ञान के प्रकाश से अंधेरे को अलग कर देगा।

दयानन्द से ऋषि दयानन्द बनकर ऋषि ने भारतवर्ष भर में घूम कर वेद का प्रकाश किया। उपदेश दिए शास्त्रार्थ किए, ऋग्वेदादि, भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, स्वमन्तव्य प्रकाश, गोकरूणनिधि आदि सैकड़ों वेद आधारित पुस्तकें लिखी, आर्य समाज संपित किए ऋषि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द के आदेश का जीवन भर पालन किया और हम भारतीयों को सोते से जगा दिया हम अपने स्वरूप को भूल गए थे और यह समझने लगे थे कि अब तो यहां अग्रेजों का ही राज होगा हम गुलाम ही रहेंगे ऋषि दयानन्द ने ही स्वराज का उद्घोष किया। पं. घासी राम के अनुसार ऋषि दयानन्द ने झांसी को रानी लक्ष्मकी बाई, नाना फड़णवीस, तात्यांटोपे व अजीमुल्ला खां को हरिद्वार में बुला कर उनके हृदयों में स्वतन्त्रता हेतु क्रांति की चिगारी प्रज्वलित की थी। कांग्रेस के डॉ. पट्टाभिसीतारमैया के अनुसार सत्तासी प्रतिशत क्रान्तिकारी नेता आर्य समाजी थे अथवा आर्या सम्पतियों के सम्पर्क में उनसे प्रभावित थे।

महर्षि दयानन्द के गुरू स्वामी विरजानन्द ने वेद के प्रकाश करने को कहा था कारण यह है कि वेद सब सत्य विद्याओंका पुस्तक है वेद समस्त मानव जाति हेतु है वेद में किसी जाति वर्ग भूगोल का विषय नही है न ही कोई इतिहास की घटनाओं का वर्णन है न किसी विशिष्ट मनुषय उसके परिवार की महानी है वेद मनुष्य के जीवन का यथार्थ है सृष्टि का ज्ञान है मान से सम्बन्धित शिल्प, चिकित्सा, अर्थ, राज्य व्यवस्था, चिकित्सा आयुर्वेद, युद्व, शस्त्र अस्त्र, संस्कार, भूगर्भ, भूमण्डल, वनास्पति, कृषित, आकाश, ब्रह्माण्ड उसमें सूर्य, चन्द्र, ग्रह, आत्मा... का ज्ञान है। आज भी विद्यालयों व विश्व विद्यालयों में समाजश ास्त्र कानून, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, भूगोल व खगोल, ऊर्जा, भौतिक व रसायन जीवन विज्ञान कृषि, वनस्पति आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता है उसी प्रकार वेद के भी अनेक विषय हैं जिसमें प्रकृति का ज्ञान है। आज के ज्ञान विज्ञान के साथ आत्मा परमात्मा का ज्ञान नही है वेद में जीवात्मा परमात्मा का ज्ञान है क्योंकि ईश्वर जगत पिता है जगत का निर्माण ईश्वर ही करता है तो इस भौतिक जगत को बनाने वाले का भी तो स्मराज करना चाहिए वेद आज के विज्ञान से ऊपर है और जो भौतिक ज्ञान है वेद में है, भास्कराचार्य, वाराहमिहिर, गौतम, कणाद, सुश्रुत, चरक आदि विद्वानों के अनुसार जो ज्ञान दिया गया वैज्ञानिको के शोध व प्रमाणों के अनुसार सत्य है। प्रमाणित है आज खोजों के आधार पर हम देखते हैं जो भी ज्ञान है वह वेदानुसार ही है।

गुरू विरजानन्द को पता था कि प्राचीनकाल से यही वेद विद्या है जिसमें मानव जाति सुखी थी कही कोई

दुखी था सब एक दूसरे का सम्मान करते थे। कहीं कोई ईर्ष्या द्वेष व पक्षपात न था न कोई मद्यपानी होता था न चोर व व्यभिचारी होता था। घर-घर अग्नि होज होते थे एक ईश्वर की उपासना करते थे अन्ध विश्वास व पाखण्ड नहीं थे सत्य न्याय पूर्वक पक्षपात रहित सब के साथ व्यवहार करते थे ऐसी व्यवस्था थी वैदिक युग में आज भी प्राचीन कालकी शिक्षण संस्थाओं के खण्डहर मिल जाते है नालन्दा तक्षशिला विश्व विद्यालय उसी विद्या के अनुरूप शिक्षा के स्थान थे आक्रमण कारियों ने यहां गुरूकुल आश्रम व विद्यालयों स्मारक व प्राचीन भवनों को तोड़ने दिया पुस्तकालयों में प्राचीन इतिहास की धरोहर पाण्डुलिपियां भोजपत्र ताड़ पत्र आदि पर लिखी रखी थीं। जिनकों विदेशी आक्रमण कारियों ने नष्ट कर दिया आग लगाकर राख कर दिया। जब हमारे शिक्षा के संस्थान व भवन आदि ही न रहे तब शिक्षा कहां से मिलती विद्वानों व शास्त्रीयों को ले गए या मार दिया यहां की जनता के साथ... अत्याचार किए गए मत परिवर्तन किए गए तब सहसों वर्षो तक चलने वाली इस विनाश कारी आंधी से मानव जीवन संकट ग्रस्त हो गया।

हम इस कुचक्र में अपने वेद ज्ञान से वंचित होते गए रास्ता भटक गए किसी ने जो अज्ञान पूर्ण बताया उसको ही मानने लगे न शिक्षा रही न शिक्षा शास्त्री रहे वेद को तो कैसे जानते थोड़ी बहुत संस्कृत व वेद विद्या की परिपाटी कहीं कहीं रह गई जो चलती रही ऐसे में गुरू विरजानन्द ने दयानन्द को शिक्षा देकर धरती पर वेद विद्या का प्रकाश करने को प्रेरित किया आदेश दिया आज उस दयानन्द का भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व ऋणी है जिसने हमें वेद का पुनः प्रकाश देकर मानवता का पाठ पढ़ाया इसीलिए आर्य समाज चाहता है कि दुनियों के लोग मानव बनें, इन्सान बनें यही पाठ है वेद में। आज पाश्चात्य देशों में भी वेद को मानने लगे है वेद जाति वर्ग भूगोल व्यक्तिवाद ईर्ष्यो द्वेष इतिहासिक घटनाओं परिवारिक कहानियों से हट कर सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है इसमें सृष्टि भर का ज्ञान विज्ञान है परमात्मा जीवात्मा का ज्ञान है विदेशी भी कहने लगे हैं वेदों की ओर लौटो अर्थात बैक टु वेदाज इसके लिए ऋषि दयानन्द के ऋण को हम कभी भुला नही सकते बस इतना कार्य अवश्य करते रहे कि उस कार्य का आगे बढ़ाते रहे वेद प्रचार करते रहे। वेद प्रचार सभी आर्यो का परम धर्म है।

ऋषि दयानन्द ने वेदों की ओर चलने हेतु प्रकाश किया क्योंकि वेद सभी के लिए है संसार की भलाई के लिए हैं मानवता का ज्ञान है परमात्मा का ज्ञान है सत्य व न्याय के विषय हैं किसी सम्प्रदाय जाति भूगोल व्यक्ति का इतिहास व कहानी नही है मानव और मानवता का नाम है श्रेष्ठता का निर्माण है।

डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह
चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा-२०३१३१

.....***.....

करता था क्यों रहा, अब करि क्यों पछिताय।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय।।

- कबीरदास

मनुष्य को कोई भी काम करने से पूर्व सोच लेना चाहिए कि इसका परिणाम क्या होगा। कबीरदास कहते हैं कि हे मनुष्य ! जब तू काम कर रहा था, तब तूने क्यों न सोचा। अब कर्म करके पछताने से क्या लाभ? जिसने बबूल का पेड़ बोया है, उसे आम के फल खाने को कैसे मिलेंगे?

मुम्बई में आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिध सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर ०२ से १० मई २०१५ तक आर्य समाज मुलुण्ड कॉलोनी मुलुण्ड (पं.) के प्रमाण में आवासीय शिविर आयोजित किया गया।

शिविराध्यक्ष श्री भूपेश गुप्ता महामन्त्री, आर्य समाज मुलुण्ड कॉलोनी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ शिविर प्रारम्भ हुआ।

शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन श्री धर्मवीर आर्य कुरूक्षेत्र हरियाना एवं सन्तोष राजीर मुम्बई ने किया। आर्य वीर दल मुम्बई के संचालक पं. नरेन्द्र शास्त्री तथा महामन्त्री पं. धर्मधर आर्य के नेतृत्व एवं श्री कल्पेश आर्य व ज्ञानप्रकाश आर्य तथा नरेश शास्त्री के अथक पुरूषार्थ से सम्पन्न हुआ।

शिविर में लगभग ५० आर्य वीरों ने भाग लिया इनको कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्गों में विभाजित किया गया। जिसमें घाटकोपर, सायन, कुर्ला, बोरीवली, खार, मलाड, मुलुण्ड, डोम्बिवलि, ठाणे, विंडी, वसई, काकडवाडी, भाण्डुप आदि मुम्बई के विभिन्न स्थानों से शिविराथियों ने भाग लिया। प्रातः ५ बजे से रात्रि १० बजे तक चलने वाली व्यस्त दिनचर्या में इन आर्यवीरों को आसन-प्राणायाम, कुंग-फू कराटे, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, र्यनमस्कार आदि के व्यायाम तथा विभिन्न खेल खिलाए गये। ईश्वर-जीवन-प्रकृति, वेद, सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, १६ संस्कार, वैदिक वर्णाश्रम व्यवर्स की जानकारी सरल ढंग से दी। बौद्धिक कक्षाओं में स्थानीय विद्वानों, श्री योगेश शास्त्री, श्री नागेश शास्त्री, श्री दिलीप वेलाणी, श्री विक्रम गुप्ता, श्री सन्दीप गुप्ता, श्री नरेन्द्र वेदालंकार, श्री प्रकाश वेदालंकार ने चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, तनाव मुक्ति, योग व व्यवहारिक जीवन में सफलता स्वस्थता आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला। इन सभी विषयों की बौद्धिक परीक्षा ली गई जिनमें वरिष्ठ वर्ग में प्रवीन आर्य ने प्रथम, हर्ष द्वितीय एवं आयुष्मान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में हर्षिल दमनिया प्रथम, अनुज द्वितीय तथा विवेक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अनुशासन में अमन, आसन में अभिराम, कराटे में रितेश, स्केटिंग में अंकुश, तीनन्दाजी में यश, शूटिंग में अंकित, सर्वांसुन्दर व्यायाम में शुभम एवं सेवा में विशाल सरोहा ने विशेष स्थान प्राप्त किया।

समापन समारोह १० मई को प्रातः १० बजे मन्त्र पाठ से प्रारम्भ हुआ। पं. धर्मधर आर्य ने देश भक्ति का जोशीला गीत गवाया। तत्पश्चात दल के संचालक आचार्य नरेन्द्र शास्त्री ने आर्य वीर दल का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रशिक्षित आर्य वीरों के भजन, भाषण, संवादों एवं अनुभवों को सुनकर दर्शक वृन्द भावविभोर हो गये, शारीरिक प्रदर्शन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, कराटे, आसनों के स्तूप एवं वैदिक गणित आदि को देखकर श्रोतागण मन्त्रमुग्ध थे। श्री विनोद ओवराय प्रधान-आर्य समाज मुलुण्ड कॉलोनी ने कहा कि सूर्य की तरह अनुशासन में रहकर आगे बढ़ना है। श्री राजन खन्ना जी ने कहा कि हमें नींव की इअ की तरह समाज को मजबूत आधार प्रदान करना चाहिए। चेम्बूर से पधारे श्री चन्द्रभूषण गिरोत्रा जी ने सभी आर्य वीरों के उज्जवल भविष्य की कामना की। पतंजलि से श्री सुरेश यादव ने महर्षि दयानन्द का सपना साकार करने की प्रेरणा आर्य वीरों को दी। आ.प्र.नि. सभा मुम्बई के महामन्त्री श्री अरूण अब्रोल ने सभी आर्य समाजों की सहभागिता को सराहनीय कदम बताते हुए सम्पूर्ण कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य में इस प्रकार के आयोजन होते रहने चाहिए।

आर्य वीरांगना दल की संचालिका आदरणीय श्रीमती जया बेन जी ने माता पिताओं की भावनाओं का सम्मन किया। शिविर में बच्चों को भेजकर सही निर्णय लिया।

पं. धम्रधर आर्य सिद्धान्ताचार्य महामन्त्री-आर्य वीर दल मुम्बई ने सभी समाजों के अधिकारियों के विशेष सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञानपन किया। अन्त में ध्वजावतरण तर्ा शिक्षकों द्वारा शान्ति पाठ के साथ शिविराध्यक्ष ने शिविर समाप्ति की घोषणा की। तत्पश्चात सभी ने ऋषि लंगर में भाग लिया।

.....***.....

- काव्य सुधा -

धन से.....

धन से भोजन खरीद सकते हैं - भूख नहीं
धन से मूर्ति खरीद सकते हैं - भगवान नहीं
धन से बिस्तर खरीद सकते हैं - निंद्रा नहीं
धन से चश्मे खरीद सकते हैं - दृष्टि नहीं
धन से मनुष्य खरीद सकते हैं - वफादारी नहीं
धन से दवाई खरीद सकते हैं - स्वास्थ्य नहीं
धन से पुस्तक खरीद सकते हैं - ज्ञान नहीं
धन से कलम खरीद सकते हैं - विचार नहीं
धन से नौकर खरीद सकते हैं - सेवक नहीं
धन से स्त्री खरीद सकते हैं - पत्नि नहीं
धन से शस्त्र खरीद सकते हैं - हिम्मत नहीं
धन से मजबरी खरीद सकते हैं - खुद्दारी नहीं
धन से सुख-साधन खरीद सकते हैं - स्वास्थ्य नहीं

.....***.....

दिवाली-पर्व पर दयानन्द ऋषि...

न श्रुतिवान तुझसा; तेरे बाद आया।
दयानन्द ऋषि तू, बहुत याद आया।।
स्मच्ति की सुरीली, परवाज तेरी
बहुत खूबसूरत थी, वेदशैली तेरी
जमाने को जिसने, सयाना बनाया
दयानन्द ऋषि तू, बहुत याद आया।।१।।
तेरा गम अगर चे, बहुत है पुराना,
तुझे हमसे बिछड़े, हुआ इक जमाना
तेरा नाम कोई, नहीं भूल पाया
दयानन्द ऋषि तू, बहुत याद आया।।२।।
चले जायेंगे हम, मुसाफिर है सारे
मगर एक दुखवां, है जब में हमारे,
तुझे कितनी जल्दी, ईश ने बुलाया
दयानन्द ऋषि तू, बहुत याद आया।।३।।
मेरा दिल फिर आज, आ गया है
के लोगों ने तेरा, एहसान माना।
दयानन्द ऋषि तू, बहुत याद आया।।४।।

पं. सत्यवीर शास्त्री, नागपुर

.....***.....

वेदज्योतिः विस्तारिता

देवः दयानन्दः नमो नमः
स्वामी दयानन्दः नमो नमः
ऋषिः दयानन्दः नमो नमः
वेदज्योतिः विस्तारिता।।१।।
गुरूकुलः स्थापकः नमो नमः
शुद्धिः संप्रेरकः नमो नमः
स्वामी श्रद्धानन्द नमो नमः
वेदज्योतिः विस्तारिता।।२।।
धर्मः प्रचारकः नमो नमः
शुद्धि संवाहकः नमो नमः
लेखरामः वीरः नमोन मः
वेदज्योतिः विस्तारिता।।३।।
आर्यः विभूषकः नमो नमः।
विद्या प्रसारकः नमो नमः।।
महात्मा हंसः, नमो नमः
वेदज्योतिः विस्तारिता।।४।।
आर्यः संगठकः नमो नमः
आनंद बोधो नमो नमः
वेदज्योतिः विस्तारिता।।५।।

पं. सत्यवीर शास्त्री, नागपुर

.....***.....

स्वतन्त्रता से पूर्व आर्य समाज की छवि

देशराज आर्य, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य सेक्टर-४, रेवाड़ी, हरियाणा चलीाष - ०९४१६३३७६०९

भारत की स्वाधीनता से पूर्व आर्य समाज में अनगिनत संख्या में ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने आजादी संघर्ष में अपने प्राणों तक की बाजी लगा दी थी। उनमें से कइयों ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने स्वयं तो नहीं परन्तु उनके पूर्वजों ने महर्षि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया था। उन लोगों ने महर्षि के जीवित रहते हुए तथा उनके चले जाने के बाद आर्य समाज का कार्य निर्बाध रूप से निस्वार्थ भाव से किया। जिन्होंने महर्षि को देखा था उनका जीवन बदल गया था या कहें कि कायाकल्प हो गया था। उन दिनों आर्य समाज का सदस्य बनना बड़ा गौरव व मान प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी। महर्षि ने आर्य समाज के सदस्य उन्हीं लोगों को बनाया जो उनकी कसौटी पर खरे थे। और यह परम्परा उनके चले जाने के बाद भी चलती रही। उन लोगों में एक विशेष प्रकार की धुन जागृत हो गई थी कि आर्य समाज मूर्ति पूजा का खण्डन करता है, वेद को ईश्वर द्वारा प्रदत्त मानता है। अन्ध विश्वास, जाति-पाति, ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं मानता, इसीलिए उस समय पहली बार लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ था, समाज में एक प्रकार से नव जागरण हुआ था। जो भी आर्य समाज में शामिल होता था स्वयं को गौरवान्वित समझता था। एक लहर सी चली हुई थी और चर्चा होती थी कि एक सौम्य आकृति वाला दयानन्द नाम का संन्यासी संस्कृत बोलता है, वेद को ईश्वर की वाणी मानता है। अन्ध विश्वास, ढोंग, पाखण्ड और मूर्ति पूजा का खण्डन करता है। पहली बार इन बातों को सुनकर लोगों में जिज्ञासा होती थी। उस समय के आर्य समाजी महर्षि के बताये सिद्धांतो पर अक्षरसः चलते थे। उन सबमें समाज सेवा भावना का ही लक्षण था।

इसके बाद उन आर्य महापुरुषों का जीवन धन्य हुआ, जिन्हें महर्षि के दर्शन करने वाले महामानवों का सानिध्य प्राप्त हुआ। आर्य समाज के इतिहास में यह दूसरी पीढ़ी मानी जाती हे। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में अर्य समाज पूर्णरूप से युवावस्था की अंगड़ाई लेने लग गया था। समाज में एक विशेष प्रकार की जागृति उत्पन्न हो गई थी। पुरानी परम्पराओं, रुढ़ियों एवं अन्धविश्वास को तोड़ते हुए एक नई सुधारवादी विचारधारा बनने लगी थी एक प्रकार के समाज का पुनर्उत्थान प्रारम्भ हो गया था। उस समय के विख्यात हिन्दी भाषा के लेखकों पर भी आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव छाया हुआ था। बेशक कुछ ही लेखकर आर्य समाज से नहीं जुड़े थे, परन्तु उन्होंने अपने साहित्य लेखन कार्य में यत्र-तत्र प्रसंगवश आर्य समाज के सुधारवादी आन्दोलन विचारधारा का जिक्र किया है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री का जन्म १८९१ में हुआ, परन्तु उन्हें उनके पिता श्री केवलराम से आर्य समाज क शिक्षा घुट्टी में मिली। चतुरसेन शास्त्री ने अनेक कहानियां, उपन्यास एवं नाटक लिखे। उन्होंने अपने कई उपन्यासों में आर्य समाज की प्रशंसा में कई प्रकरणों में यत्र तत्र संकेत किए हैं। उन्होंने यह लिखा है कि उनके पिता ने महर्षि दयानन्द के दर्शन कर्णवास में किए थे तथा महर्षि का उपदेशामृत भी सुना था। आचार्य जी लिखते हैं कि उनके पिता कम पढ़े-लिखे थे। वे कट्टर आर्यसमाजी बन गए थे। उनमें बड़ा जोश था। वे वक्ता तो नहीं थे, परन्तु १०,२० लोगों को अपने दबदबे से अर्य समाज की विचारधारा मनवाने में सक्षम थे। डीलडोल विशाल था। लाठी चलाने में माहिर थे। जरूरत पड़ने पर वे अपने नालदार चमरोधे जूतों से ही चार पांच आदमियों को सबक सिखाने में दक्ष थे। वे अक्सर जाकर मठ, मन्दिरों से मूर्तियों को उड़ाकर कहीं नदी तालाब के पानी में बहा देते थे। पिता के संस्कार आचार्य में भी रहे तथा इन्होंने अपने साहित्य में जहां-तहां आर्य समाज की सुधारधारी विचारधारा का प्रसंगवश जिक्र किया है।

इसी समय में गुरुदत्त ने भी हिन्दी साहित्य में अनेक रचनाएं लिखी। गुरुदत्त के पिता एवं भाई तो आर्य समाज लाहोर के सदस्य भी रहे थे तथा गुरुदत्त स्वयं डी.ए.व्ही. आर्य हाई स्कूल में पढ़ते थे। उन्होंने लिखा है कि उस समय पंजाब में आर्य समाज ओर आर्य समाज का डी.ए.व्ही. स्कूल तथा कालेज देशभक्ति सिखाने वाली संस्थाएं समझी जाती थी। गुरुदत्त के साहितय में देशभक्ति एवं समाज सुधार की बातें मुख्य रूप से मिलती है। इन्होंने बचपन से आर्य समाज के सुधारवादी कार्य देखशे थे तथा इनके विचारों में भी देशभक्ति का जज्बा बन गया था। गुरुदत्त की पुस्तकों से अर्य समाज की अनेक नई जानकारियां प्राप्त होती हे। आर्य समाज के इतिहास को सुदृढ़ बनाने हेतु आचार्य चतुरसेन

एवं गुरुदत्त द्वारा लिखे गए संक्षिप्त प्रकरणों से नवीन जानकारियां प्राप्त की जा सकती है। ये बीसवीं सदी के प्रारम्भ के लेखक हैं तथा आर्य समाज से प्रभावित भी थे।

हिन्दी साहित्य के एक अन्य लेखक फणीश्वर नाथ रेणु के पिता भी कट्टर आर्य समाजी थे। यद्यपि फणीश्वरनाथ रेणु की पारिवारिक पृष्ठभूमि अलग थी। परंतु इनके द्वारा लिखित मैला आंचल और परती परिकथा में ग्रामीण आंचल की तस्वीर एवं समाजवादी आन्दोलन की झलक एवं जमींदारी प्रचार जानकारी के साथ सुधारवादी सन्देश भी मिलता है। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक जयशंकर प्रसाद भी आचार्य चतुरसेन व गुरुदत्त के समकालीन थे। इन्होंने भी अनेक महानियां व उपन्यास लिखे हैं। जयशंकर प्रसाद का एक उपन्यास राजस्थान शिक्षा की बरहवीं कक्षा में कंकाल उपन्यास पाठ्यक्रम में था। इसमें भी तत्कालीन सामाजिक परिवेश का चित्रण है जिसमें तीर्थ नगरों के आडम्बर से परिपूर्ण जीवन का खांका खींचा गया है। इस कंकाल उपन्यास में भी आर्य समाज के सुधारवादी आन्दोलन का कई जगह प्रकरण आता है। इससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि सामाजिक कुरीतियों का खण्डन करने में आर्य समाज की विशेष भूमिका रही है। प्रथम दृष्ट्या ये लेखक आर्य समाज से प्रमाण रूप से जुड़े हुए नहीं थे परन्तु उस समय आर्य समाज की सुधारवादी नीतियां जागृति का पर्याय बन गई थी तथा जनमानस के विचार और चिन्तन में आर्य समाज का प्रभाव जाने अनजाने, चाहे, अनचाहे स्पष्ट दिखाई देता था। आजादी के कुछ समय बाद तक भी आर्य समाज की प्रभावशाली छवि गांव देहात में महिलाओं के गीतों में दिखाई पड़ती थी। बचपन की धुंधली याद है कि महिलाएं ऋषि दयानन्द के गीत गाती थी - एक पन्क्ति है- एक ऋषि दयानन्द आया हे सखी, सेवा बताई गऊ बलदां की एक अन्य गीत की पंक्ति- पढ़ा दे मेरा वीर पढ़ूंगी गुरुकुल में कितना प्रभाव था उन दिनों में आर्य समाज का। बचपन में हम सुना करते थे कि जो सत्यार्थ प्रकाश पढ़ लेता है उसे रात्रि को श्मशान में डर नहीं लगता। ऐसी मान्यताएं उस समय थी। हम सुनते थे कि दयानन्द एक ऐसा सन्यासी है जिसने चारों वेद पढ़े हैं। उसने अपने बल से घोड़ा-गाड़ी को रोक लिया। ऐसी बातों की चर्चा हुआ करती थी। एक अंग्रेजी भाषा के लेखक, बी.एस. नाथपाल का नाम कुछ लोगों ने अवश्य सुना होगा। नाथपाल ने अपने उपन्यास- ए हाऊस फॉर मिस्टर विश्वास में भी आर्य समाज के सुधारवादी कार्यों की जिक्र किया है। उपन्यास में शिवलोचन एवं पंकजराय भारतीय नाम के दो प्रचारक त्रिनिदाद में प्रचार करने हेतु भारत की आर्य समाज प्रचारक समिति द्वारा भेजने का प्रसंग दिया हे। यद्यपि वहां कुछ पीढ़िया पूर्व भारत से गये हुए लोग हैं जो इसाई बन गए हैं। उपन्यास केवल लेखक की कल्पना होती है। जिसमें किसी एक कथानक पर समस्त रचना की जाती है।

.....***.....

मेरे सामने वाले घर की दादी
सुबह सवेरे अपने घर से
बार-बार अंदर बाहर आ जा
रही थीं।
मुझसे रहा नहीं गया
इसीलिए पूछा- 'दादी जी
कुछ प्रॉब्लम है क्या? आप
बार-बार अंदर बाहर आ
जा रही हो तबीयत तो ठीक
है ना?'

दादी बोलीं 'बेटा, मेरी बहू योगा कर रही है.... टीवी
देखकर। और वो योग वाले बाबा कह रहे हैं..... सास अंदर
....सास बाहर.... सास अंदर.... सास बाहर।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान (२३ दिसम्बर, १९२६ ई०)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम जनता में प्रसिद्ध है। संन्यासाश्रम से पहले इनका नाम महात्मा मुन्शीराम जी था। जब इन्होंने अपनी सब सम्पत्ति का त्याग कर दिया, और अधिकांश में गुरूकुल कांगड़ी को वह सम्पत्ति दे दी और उनके पास अपने और अपने पुत्रों के लिए कुछ बाकी न रहा, तब उन्हें आयोजनता ने महात्मा शब्द से पहचाना। इससे पहले व लाला मुन्शीराम शब्द से ही प्रख्यात थे।

महात्मा जी का जन्म जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में सन् १८५६ ई० में हुआ था इनके पिता लाला नानकचन्द जी उत्तरप्रदेश में पुलिस के बड़े अफसर थे। वे बनारस, बरेली आदि कई बड़े शहरों में पुलिस कोतवाल के पद पर रह चुके थे। वे नौकरी से निवृत्त होकर अपने गांव में आकर रहने लगे थे।

तलवन ग्राम समृद्ध था। उसमें मकान थे। दो कुए और एक मंदिर था। एक भाग में ब्राह्मण क्षत्रिय लोगों की बस्ती थी और दूसरे भाग में उसका बाजार था। जिसमें प्रायः सभी चीजें मिलती थीं। तीसरे भाग में काश्तकार प्रायः अराई मुसलमान रहते थे। तलवन उस समय पुराने विचारों का जबरदस्त गढ़ था।

श्री मुन्शीराम जी का गृहस्थ्रिम में यह स्वभाव ि कि हरेक चीज को बड़ी मात्रा में रखा करते थे। उस समय कौलर, नकटाई आदि सब कुछ पहनते थे। परन्तु सिर के ऊपर साफा या फैल्ट कैप होती थी। अंग्रेजी टोप उन्हेंने कभी नहीं पहना। वे अने वकालत के दिनों में भी सुगन्धित तैल लगाकर बाहर नहीं जाते थे। जल्दी सोना और जल्दी उठना सर्वदा उनके जीवन का अंग बना रहां उनका सर्वदा यही विचार रहा कि यथासम्भव पुरानी रस्मों को तोड़ा जाये।

इसी के कारण वह ऐसी शिक्षाप्रणाली चाहते कि जिस शिक्षा में शिक्षित हुए भारत के नव युवक पुराने रूढ़ि रिवाजों के अलग होकर वैदिक शिक्षा-प्रणाली के अनुसार शिक्षित हों। इन विचारों की और भी अधिक पुष्टि हो गई जब उन्होंने बरेली में महर्षि स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुने और उनसे ईश्वर धर्म आदि के सम्बन्ध में अनेक विचार परिवर्तन किये। इससे उनके जीवन में महान क्रांति हुई। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और उसमें बताई हुई गुरूकुल शिक्षाप्रणाली का निर्देश और आवश्यकता प्राप्त की। उनको इस विचार ने इतना प्रेरित किया कि जब तक भारतीय विद्यार्थी नवीन अंग्रेजी शिक्षा-प्रणाली को छोड़कर पुरानी वैदिक आर्ष-प्रणाली के पठन-पाठन का अभ्यास नहीं करेंगे तब तक भारतीय युवकों में जागृति नहीं आ सकती।

इतिहास का अध्ययन करते हुए उन्होंने भारत की पराधीनता का कारण जान लिया कि भारतीय युवकों को अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा ऐसा बनाया जा रहा है जिससे भारतीय युवक देखने में तो भारतीय हो परन्तु अन्दर से आचार व्यवहार और विचारों में पूरे अंग्रेज हों।

अंग्रेजी शिक्षा मैकलो की शिक्षापद्धति का परिणाम है। उसे जड़ से बदलने की आवश्यकता महात्मा जी ने अनुभव की।

अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम से नवयुवकों में मद्य-मास का प्रचार हो रहा था। सिगरेट और बीड़ी का व्यसन लोगों में घुस गया था। अफीम, भांग, चरस आदि मादक द्रव्यों में नवयुवक बंधते जा रहे थे। शिक्षित लोग मिथ्याभिमान के कारण अशिक्षतों से घुणा ओर भेदीाव सीख चुके थे। युवकों में अशिष्टता, असभ्यता ओर दुराचार आदि के रूप में अंग्रेजी शिक्षा ने युवकों के हृदयों को काबू कर लिया था। संयम ओर सदाचार शब्द असम्भव जेसी वस्तुएं समझी जाने लगी थीं। कलियुग में ब्रह्मचर्य जैसी कोई वस्तु भी हो सकती है इस पर लोगों का विश्वास हट गया था। इस प्रकार महात्मा जी ने यह आवश्यक समझा कि सदाचार का प्रचार करने के लिए सद्धर्म प्रचारक अखबार निकाला जाये, और गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के लिए एक संस्था स्थापित की जाए।

सद्धर्म प्रचारक अखबार उर्दू भाषा में प्रकाशित होता था। परन्तु शिक्षा प्रणाली के लिए गुरूकुल की स्थापना हुई। उसके कुछ ही वर्ष पश्चात् सद्धर्म प्रचारक शुद्ध हिन्दी भाषा में और देव नागरी लिपि में कर दिया गया। धार्मिक विचारों के प्रचार के लिए सम्पादकीय मुख्य लेख महात्मा जी का अपना होता था और साथ ही भारतीय जनता में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में प्रेरणात्मक अनेक लेख होते थे।

महात्मा जी ने अपने दृढ़ संकल्प के अनुसार महान् कार्य करने के लिए अपनी वकालत छोड़ दी और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पद भी छोड़ दी और आर्य

प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पद भी छोड़ दिया, तथा उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक (३०,०००) (तीस हजार) रूपया इकट्ठा नहीं कर लूंगा तब तक घर में पांव नहीं रखूँगा। उनके अनेक मित्रों ने, आर्यबन्धुओं ने उनको बहुत समझाया कि यह कार्य नहीं हो सकेगा और ऐसी प्रतिज्ञा न करें। परन्तु वे छढ़प्रतिज्ञ, और आशावादी और ईश्वर पर पूर्ण श्रद्धा रखनेवाले व्यक्ति थे। उन्होंने किसी की बात नहीं सुनी और अपने कार्य में दत्तचित होकर लग गये। कुछ ही दिनों में उनको तीस हजार रूपये प्राप्त हो गए। देश में शिक्षा सम्बन्धी क्रांति होनेवाली थी। परमेश्वर ने उनकी सहायता की। कांगड़ी ग्राम की भूमि प्राप्त होने पर गंगा के तट पर निर्जन वन में १९०२ में गुरूकुल की स्थापना कर दी।

साधारण जनता के सामने जो प्रतिनिधि सभा के लोग थे और डी०ए०वी० कालेज में अथवा अंग्रेजी शिक्षालयों में पढ़े हुए थे, तथा आर्यसमाजों के सभासद् मंत्री और प्रधान भी थे। उन सब को यही चिंता थी कि निर्जन वन में कौन अपने लड़कों को भेजेगा, कैसे वहां के लड़कों का भरण-पोषण होगा, इत्यादि अनेक संशयवाली बातों से महात्मा जी के मन को ढीला करने का प्रयत्न किया जाता था परन्तु महात्मा जी के हृदय में परमेश्वर पर अटूट श्रद्धा ि और स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश से उनको अटल प्रेरणा मिल चुकी थी। जिससे उन्होंने निर्जन वन में बैठकर गुरूकुल जेसी महान शिक्षण संस्था को आदर्श देश-देशान्तर में फैलाया। उनको सहायक भी मिल गये और भारत के सभी प्रान्तों के बच्चे भी इकट्ठे हो गये, कार्य बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न होने लगा।

आर्य समाजियों के अतिरिक्त पौराणिकों ने भी गुरूकुल शिक्षण में बड़ा सहयोग प्रदान किया। उस समय के संस्कृत पढ़ाने ओर व्याकरण, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ानेवाले प्रायः सभी पौराणिक पंडित थे। महात्मा जी ने एक विद्वान को काशी से तथा अन्य स्थानों से ला ला कर जमा किया था। वे बड़े प्रेम के साथ ब्रह्मचारियों को शिक्षण दिया करते थे।

एक बार एक कट्टर पौराकिण गुरूकुल देखने के लिये आ गया। उन्होंने यह जानकर बड़ा आश्चर्य प्रकअ किया कि चारों वरर्णो के बालक एक ही पंक्ति में एक आसन पर बैठकर भोजन करते है। यह अच्छा नहीं। महात्मा जी ने कहा हमें तो कोई भेद नहीं दीखता। अभी तो ये शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक है। शिक्षा ग्रहण करके आगे जैसे ये अपने कर्म दिखलायेंगे, वैसे सबके सामने आजायेंगे। अच्छा मैं बालकों को एक पंक्ति में खड़ा कर देता हूँ।। आप बालकों में से बता दीजिये कौन ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए है और जिन्हें ब्राह्मण बतलाया है वे शूद्र कुल में उत्पन्न हुए है। पण्डित जी बड़े लज्जित हुए। सचमुच बाहर के रंगरूप से कोई वर्ण नियम नहीं होता। प्रत्युत, गुणा कर्म से वर्ण नियत होता हे। इस प्रकार देश में प्रचलित रूढ़िवाद पर गुरूकुल शिक्षाप्रणाली ने बड़ा भारी आघात किया है और भारतीय बालाकों में नवजीवन का संचार किया है कि वे विद्या, बुद्धि और पुरुषार्थ के द्वारा जीवन में आगे बढ़ सकते है। जब कि उन को आगे बढ़ने का मार्ग नहीं मिलता था। इस प्रकार गुरूकुल शिक्षाप्रणाली ने भारतीय जीवन में क्रान्ति पैदा कर दी है।

महात्मा जी ने गुरूकुल शिक्षाप्रणाली स्थापित करके ब्रह्मचर्य के नियमों को मुख्यरूप से अभ्यास कराने का प्रयत्न किया है। प्राचीन गुरूकुल मे तो ब्रह्मचारी नंगे सिर रहते थे। छाता, जूता आदि कभी धारण नहीं करते थें। चाहे गर्मी हो, सर्दी हो वा वर्षा हो। तपस्यामय जीवन ि। कोई रोगी हो जाता तो उसकी सेवा करने के एि ब्रह्मचारी हर समय उद्यत होते थे। सब का आपस में प्रेममय सम्बन्ध ि। इन सबके पीछे एक ही बात विशेषतः कम करती थी कि महत्मा जी प्रतिदिन ब्रह्मचारियों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते रहते थे। प्रातः सायं और मध्याह एक-एक बार सब ब्रह्मचारियों के कमरे में जाकर ब्रह्मचारी को देख लिया करते थे और केवल उनके चेहरों को देखकर ही पहचान लेते थे कि किसी में ब्रह्मचर्य सम्बन्धी कोई दोष तो नहीं है। किसी को कभी निराश और हतोत्साह नहीं करते थे। वे अपने बच्चों के समान सब ब्रह्मचारियों को समझते थे। ब्रह्मचारी अपने आचार्य महात्मा जी को एक ही व्यक्ति में अपना मातृत्व और पितृत्व माने हुए थे। इस प्रकार गुरूकुल शिक्षाप्रणाली के द्वारा भारत में एक नई जागृति, नई चेतना का उद्गम हो रहा था। समझदार शिक्षज्ञ शास्त्री विदेशी और स्वदेशी सभी इस शिक्षाप्रणाली की प्रशंसा करते थे। प्रायः सभी विदेशों के महानुभाव, गुरूकुल शिक्षाप्रणाली का मूर्तरूप देखने आते रहे और यह निश्चय करके जाते रहे कि वे भी अपने देश में इसी शिक्षाप्रणाली को चलावेंगे।

महात्मा जी ने १९१७ के गुरूकुलोत्सव से कुछ दिन पूर्व संन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया और १० अप्रैल, १९१७ के दिन संन्यास ग्रहण कर लिया। बड़ी प्रसन्नता का वह दिन था जब उन्होंने सन्यास ग्रहण किया और अपने जीवन का कार्य बहुत अधिक विस्तृत कर दिया। इस कर्मक्षेत्र में अब वह आदर्श कर्मयोगी नेता के रूप में

भारत के सामने उपस्थित हुए। उन्होंने लिखा है कि संसार के नेताओं को चाहिए कि मन वचन ओर कर्म द्वारा अपने आदर्श से जनसमुदाय का जीवन सुधारें। यदि नेताओं का जीवन अपने उदाहरण से दूसरों के मन, वचन और कर्म का पालन नहीं करवा सकता हो तो अपने किये हुए कर्मो के प्रायश्चित लिए उसे एकान्त में बैठ जाना चाहिये।

उन्होंने हिन्दू आन्दोलन आरम्भ कर दिया। जिसमें चार भागों पर बल दिया गया।

१. जो लोग अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभन वश आर्य (हिन्दू) धर्म का त्याग करके अन्य मतावलम्बी हो गए है उनकी शुद्धि संस्कार के द्वारा करके पुनः आर्य हिन्दू धर्म और समाज में मिला देना चाहिए।

इस कार्य के लिये स्वामी जी ने फरवरी १९२३ में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की आगरा में स्थापना की और मलकाना, राजपूत आदि नव मुस्लिम दो लाख से अधिक मुसलमान शुद्ध किये गये।

२. प्राचीन आश्रम प्ररणाली का पुररूद्धार किया जाये। २५ और १६ वर्ष की आयु से पूर्व किसी युवक और कन्या का विवाह न हो।

३. बाल विधवाओं को पुनः विवाह की अनुमति निस्संकोच दी जायेऔर उन्हें शास्त्रीय व्यवस्थानुसार कन्या की समझा जाये।

४. प्राचीन आर्यो की वर्णाश्रम पद्धति का पुररूद्धार किया गया। हजारों जाति उपजातियों को मिटा दिया जाये। तथाकथित अस्पृश्य व दलित वर्ग को चार वर्णो में सम्मिलित कर दिया जाये। गुण कर्म स्वभाव द्वारा ही किसी भी हिन्दू का वर्ण निश्चय किया जाये। इस प्रकार से नष्ट होती हुए हिन्दु जाति बच सकती है।

सन् १९२५ में ईद के अवसर पर देहली निवासियों को सम्बोधन करते हुए कहा कि जितना तुम सहन करोंगे और मुसलमान भाइयों को प्रेम का मार्ग दिखलाओंगे उतना ही भगवान तुम पर कृपा करेंगे।

स्वामी जी का ईश्वर पर अटल विश्वास व श्रद्धा थी। इसी कारण उन्होंने अपना नाम श्रद्धानन्द रखा था। ईश्वर पर विश्वास और श्रद्धा के कारण ही वे बड़ी से बड़ी आपति आने पर भी कभी विचलित नहीं हुए।

श्रद्धेय स्वामी जी की निर्भयता इस उदाहरण से और भी अधिक प्रकट होती है। देहली में आपके नेतृत्व में सार्वजनिक सभाएं हुई। जलूस निकाला गया और गोरखों की संगीनों की आगे आपने अपनी छाती खोलकर निर्भयतापूर्वक कहा - लो मैं खड़ा हूँ, गोली मारों।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में उन दिनों दिल्ली में सचमुच रामराज्य रहा। शहर में एक भी ताला नहीं आया। एक भी मार-पीट नहीं हुई। एक भी जेब नहीं कतरी गई, और तो कया जुयेखाने और शराबखाने भी बन्द रहे। सब ने देवियोंको मां बहिन और बेटी समझकर उनका आदर किया। इस रामराज्य में सरकार की पुलिस व सेना की कहीं छाया तक देखने में न आती थी, शहर का सब प्रबन्ध जनता के अपने हाथों में था।

४ अप्रैल के दिन दोपहर के बाद की नमाज के पीछे जामा मस्जिद में मुसलमानों का एक विशाल जलसा हो रहा था उसमें मौलाना अब्दुल्ला चूड़ीवाले ने आवाज देकर कहा स्वामी श्रद्धानन्द जी की तकरीर भी होनी चाहिये। दो तीन जोशीले नौजवान उठे और तांगे पर जाकर नये बाजार से स्वामी जी को लिवा लाये। अल्लाह अकबर के नारों के साथ स्वामी जी मस्जिद की वेदि पर आरूढ़ हुए। शायद यह भारत के ही नहीं इस्लाम के इतिहास में पहला अवसर था कि एक मुसलमानेतर व्यक्ति ने जामा मस्जिद की वेदि पर से व्याख्यान किया। स्वामी जी ने ऋग्वेद के एक मन्त्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया और ओ३म् शांतिः शांति के साथ समाप्त किया। ६ अप्रैल को फतहपुरी मस्जिद में भी स्वामी जी का भाषण हुआ।

१९१९ के अन्त में अमृतसर में कांग्रेस का जो अधिवेशन हुआ उसने देश की राजनीति में युग परिवर्तन कर दिया था। उसके स्वागताध्यक्ष ओर सभापति क्रमशः युवाकाल के पुराने साथी स्वामी श्रद्धानन्द जी और पं० मोतीलाल नेहरू नियुक्त हुए थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी पर वहां के प्रबन्ध का भार डाला गया। दिसम्बर का महीना था। आकाश में बाद घिर गये थे। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। दूर देशों के प्रतिनिधि मुसीबतों में पड़ गये थे। सर्दी से बचने के लिए उन्हें धर्मशालाओं और पक्के मकानों में ठहराया गया था तो भी वे सर्दी से परेशान थे।

हिदू मुसलमानों के मेल ने असहयोग आन्दोलन को आसाधारण बल प्रदान कर दिया। इसके कारण भी महात्मा गांधी जी का देश की राजनीति पर पूर्ण अधिकार हो गया।

८ दिसम्बर १९२६ को एक बार फिर गुरूकुल पहुंचते ही प्रातः तेज ठंडी हवा लगने से उन्हें बुखार हो गया और सायंकाललौटने पर जब डॉक्टर अन्सारी की चिकित्सा आरम्भ हुई। चार दिन के लिए डा० अन्सारी को रामपुर जाना पड़ा लौटते ही उन्होंने रोगी को फिर सम्भाल लिया। उनकी

आश्वासन दिलाया जाता था कि आप उठ खड़े होंगे। परन्तु स्वामी जी ने स्पष्ट कहा कि अन्दर से यह आवाज नहीं उठती है। स्वामी जी ने शुद्धि सभा के मंत्री स्वामी चिदानन्द जी को बतलाया कि अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करू।

२३ दिसम्बर सन् १९२६ को मध्यान्ह पं० इन्द्र देव विद्यावाचस्पति प्रतिदिन की भांति श्रद्धेय स्वामी जी के दर्शन करने गए तो उन्होंने स्वामी जी को सोये हुए पाया। पास के कमरे में स्वामी जी के मंत्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकर सोए हुए थे। स्वामी जी की चारपाई के पास दरी पर उनके सेवक धर्मसिंह जी गाढ़ निद्रा में सोये पड़े थे। स्वामी जी की निद्रा में बाधा डालना उचित न समझकर श्री पं० इद्र जी सायंकाल दर्शन करने का विचार करके वापिस घर चले गये और किसी स्वयंसेवक को कमरे में बैठा गए। लगभग ढाई बजे डा० सुखदेव आदि कुछ सज्जन स्वामी जी दर्शनार्थ आये। साढ़े तीन बजे स्वामी जी ने बसको विदा किया। सेवक धर्मसिंह ने कमोड़ लाकर दिया और शौचादि से निवृत्त होकर स्वामी जी मसनद के सहारे सावधान होकर बैठ गए इतने में सेवक धर्मसिंह ने सीढ़ियों में किसी युवक को आते हुए देखा। उसने उसे रोकना चाहा। पर युवक ने स्वामी जी के दर्शन का आग्रह किया। स्वामी जी ने आवाज सुनकर कहा कौन है ? अन्दर आने दो। अब्दुलरशीद नामक उस मुस्लिम युवक ने जो एक साधारण जिल्दसाज था आते ही स्वामी जी से कहा कि मैं आपसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफतगू करना चाहता हूँ। स्वामी जी ने कहा भाई। मैं बीमार हूँ। तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊँगा, तो बातचीत करूंगा।

इतने में उसने पानी माँगा। स्वामी जी ने धर्मसिंह को पानी लाने को कहा। ज्यों ही धर्मसिंह पानी लाने के लिए बाहर की तरफ गया। उस दुष्ट ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल से तीन गोलियां चला दी। सच्चे सेवक धर्मसिंह ने उसका सामना किया तो उसकी टांग पर गोली चला दी, जिससे वह जमीन पर लेट गया। हत्यारा भागने की चेष्टा में ही था कि स्वामी जी के मंत्री पं० धर्मपाल जी ने आकर उसको दबा लिया। एक हाथ रिवाल्वर वाले हाथ पर और दूसरा उस पर रखे हुए उसको आधा घण्टे दबाये रखा। इन तीनों गोलियों ने स्वामी जी का तो शरीरान्त कर दिया था अन्त में उन्होंने ओ३म् का स्मरण किया और साथ हे ऐसे मतान्धों की सद्बुद्धि के लिए भी भगवान से प्रार्थना की।

इस प्रकार गुरूकुल शिक्षाप्रणाली के समुद्धारक, आदर्श सुधारक, आदर्श आचार्य, कर्मयोगी नेता, दीनों दलितों के परम उद्धारक, सच्चे ईश्वरभक्त, श्रद्धामूर्ति आर्य जाति के हृदय सम्राट् सन्यासी का अमर बलिदान २३ दिसम्बर, १९२६ ई० को सायं. ०४ बजे के लगभग हुआ। वस्तुतः वीर सन्यासी के योग्य यही अवसान था।

(नोट :यह लेख आर्य समाज के बलिदान (लेखक स्वामी ओमानन्द सरस्वती) ग्रन्थ से लिया गया है)

.....***.....

राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर सम्पन्न

आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द में २३ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २०१५ को राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालयों के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटे के साथ-साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त किये।

शिविरार्थियों को बौद्धिक शिक्षा प्रदान करने के लिये संस्कृत विद्यामण्डलम् के अध्यक्ष डां. गणेश कौशिक, सचिव सुरेश शर्मा, अपेक्स बैंक के अध्यक्ष व भारतीय जनता पार्टी के नेता अशोक बजाज, मुख्यमन्त्री छ.ग. शासन के नीजी सलाहकार डां. अशोक चतुर्वेदी, रायपुर एम्स के डीन डां. सूर्यप्रकाश धनेरिया, गुजरात से पधारे स्वामी शान्तानन्द जी महाराज आदि अनेक गणमान्य विद्वानों एवं स्थानीय नेतागण उपस्थित रहे।

इस पंचदिवसीय शिविर में युवाओं को शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्तर पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। कपिलदेव शास्त्री, मुकेश शास्त्री, दुःखनाशन आर्य आदि अनेक व्यायाम शिक्षकों ने कुम्फू कराटे, योगासन आदि के प्रशिक्षण द्वारा आत्मरक्षा के गुर सिखाये। इस शिविर के साथ-साथ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की भी पूर्णाहुति २७ दिसम्बर को की गई। इस सम्पूर्ण आयोजन के प्रेरणाश्रोत स्वामी धर्मानन्द सरस्वती व गुरुकुल के आचार्य कोमल कुमार ने अपने सहयोगियों के साथ इस आयोजन को सुव्यवस्थित सम्पन्न किया।

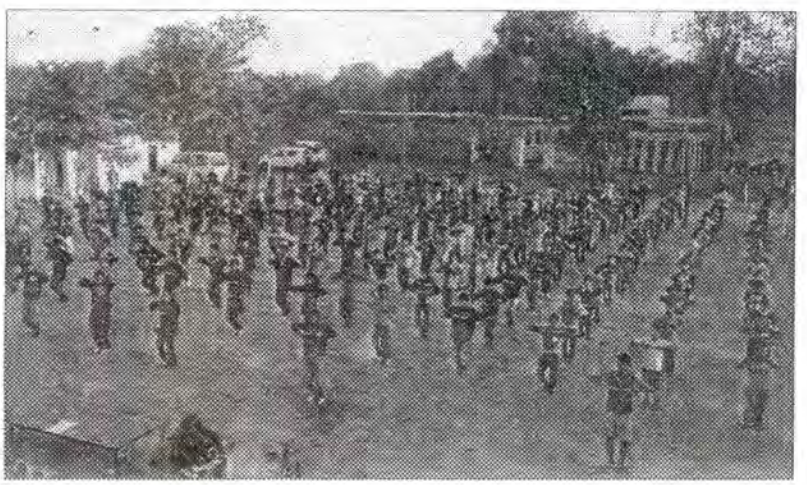

आर्य जगत के समाचार एवं सूचनाएं

दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेंद्र कुमार जी को शाल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए दायें से आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (संपादक-अध्यात्म पथ) साध्वी उत्तमा यतिजी, श्री यशपाल आर्य जी (निगम पार्षद) एवं प्रि. अरूण आर्य जी (अध्यक्ष-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट)

संस्कृत संगीत संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह सोल्लस सम्पन्न

नई दिल्ली, अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज बी-२ जनकपुरी में विश्वशांति महायज्ञ, संस्कृत संगीत भजन संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरूण सहारन ने की तथा इनके विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डॉ. रमाकान्त शुक्ल एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार थे। समारोह का आयोजन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के सानिध्य में हुआ। इस अवसर पर अध्यात्म पथ पत्रिका एवं ज्ञान गंगा का लोकार्पण स्वचारवच भरे सभागार में विद्वत्जनों की उपस्थिति में हुआ।

चमनवाटिका अन्तर्राष्ट्रीय कन्या गुरूकुल कन्याओं के लिए एक आवासीय स्कूल

आपको जानकार हार्दिक प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष अभिभावकों की यह मांग पूरी हो रही है। गुरूकुल कुरूक्षेत्र की ही तर्ज पर इसी वर्ष से बेटियों के लिए भी अंग्रेजी माध्यम का एक आवासीय अन्तर्राष्ट्रीय गुरूकुल शुरू किया जा रहा है। हमारे निवेदन पर अम्बाला के प्रसिद्ध उद्योग पति बाबू राजेद्रनाथ जी ने अपने अत्यन्त प्रतिष्ठित अंग्रेजी माध्य के चमनवाटिका इन्टरनेशनल स्कूल को परिवर्तित करके चमनवाटिका अन्तर्राष्ट्रीय कन्या गुरूकुल के रूप में प्रारम्भ करने की सहमति दे दी है।

चुनाव संपन्न

आर्य समाज - लालमाटी, पूर्वी धमापुर-जबलपुर का वार्षिक निर्वाचन वर्ष २०१५-१६ का संपन्न हुआ। जिसमें प्रधान-श्री राम सुरेश सिंह, मंत्री - श्री प्रेम कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष - श्री भगवत प्रसाद निर्वाचित हुये।

.....***.....

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने किया अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवारों का सम्मान

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का ११ वाँ वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (यात्रिक) परिवार सम्मन समारोह रविवार दिनांक ५ अप्रैल २०१५ को सायं. ५ से ९ बजे तक बड़े ही हर्षोल्लास से साथ मनाया गया।

इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ वृहद यज्ञ से हुआ, अनेक आर्य समाजों से प्रतिदिन यज्ञ करने वाले याज्ञिकआर्य नर-नारियों ने २२ हवन कुण्डों पर उपस्थिति होकर श्रद्धापूर्वक विशेष हवन सामग्री व शुद्ध गोघृत से आुतियाँ चढ़ाते हुए रोग निवारण एवं सुख शान्ति, समृद्धि एवं समुन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

पं. नरेन्द्र शास्त्री
मन्त्री : आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई

आर्य सेवक, नागपुर

प्रति, _____

_____

प्रकाशक : अशोक यादव, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्यप्रदेश एवं विदर्भ, नागपुर फोन : ०७१२-२५९५५५६ द्वारा उक्त सभा के लिये प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : फोन :